D.

NO. 30

55 p.

अमर कोष
with notes

30
502

No. 30



[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]



[illegible]

९०

[illegible]

विगलन्तुवं, घुमन्नमङ्गुभृन्तुवि ऽन्तुचक्षोमगान्किणी। [illegible]
गान्किकेन्मुगान्किंगान्किंरंयवकेगन्, भक्षुविणि
प्रकुन्तव्निनुभृ ठिणिवः पकिः मनुक्रिन्गुठिणिवृषै
वयभृकुद्रयिनीकवीः कृटकाभूःनःमेकवनगामरुः
भोकाविवयः भृकुन्मैन्यमनुपगभिुयः पैकुनगभुयः भृ
देठभ्रवभूयमनुभिठुनभः, भठेमठुमनमनुवैवमेठुय
विभठुभन्ःमघनठनुक्रियःभृन्गवुन्तमनुमनीमरुः।
केन्लानयः केन्लानेवनुन्लेवठकीमरुः। वेयमकिव
भग्ठेकिवकीठुमनीयमि, ठकेन्लाठियःमृकि
लायेयिमकुन्ः। तुणीमठुनुगनेवेठमेकव
घठुकुन्भुवयःमृवःमरुःमठुःमिुयक्षुमीयुक
मुक्तिंभचेयमृकंठमननमनुवःमनुतिङ्गिव
कन्निनुठकुठेवकवकवकभीठेननुनवकः
पिलबभुनयिलमनन्तुमनुमयमठुकःघद
भुठुकाननामठुनयिजीनमटपि। नवयिजी
मनुमनठनवीकगीरीभिगम, नयमनुभुगमकठव
भीपिञ्जीमठकुन। तयपुठुठनुकयाठुमा

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

१७

35

[illegible]

श्री:

[illegible]

श्रीः

[illegible]

२०

स्मृतिसार:

by

शिवोपाध्याय

of Kashmir

unpublished